Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-6, Dec-2013 Available online at www.aygrt.isrj.net

शमशेर की काव्य-चेतना

पल्लवी प्रकाश
एम.ए.,एम.फिल.,पीएच.डी. (हिंदी), जे.एन.यू.,नई दिल्ली

सारांश --- शमशेर बहादुर सिंह उन उल्लेखनीय रचनाकारो में से एक हैं जिन्होने छायावाद से ले कर नयी कविता तक का सफर प्रभावपूर्ण तरीके से तय किया है. शिल्प और सम्वेदना, दोनो ही के स्तर पर उनकी कविताये अविस्मरणीय हैं. उनकी रचनाओ को किसी निश्चित खाँचे में नही बाँटा जा सकता. लेकिन इससे उनकी कविता का महत्तव कम नही होता बल्कि कई गुना बढ जाता है.

प्रस्तावना-

शमशेर की कविता अनुभूति की कविता है जिसकी गहराई में उतर कर ही उसे पाया जा सकता है. इस गहराई को ना माप पाने की वजह से ही कई बार उनकी कविता पर दुरुह होने का आरोप लगाया जाता रहा है. इस दुरूहता की वजह है उनमे नागार्जुन तथा केदारनाथ अग्रवाल की कविताओ की तरह ठोस अर्थ की तलाश जिसे न पाने पर कविता दुरूह मान ली जाती है. लेकिन वस्तु-स्थिति यह है कि अर्थ को अधिक से अधिक छोड कर लिखने पर भी शमशेर की कविता गद्य से सर्वाधिक क्रिया-प्रतिक्रिया करती दिखाई देती है. यदि एजरा पाउंड की उक्ति को ध्यान में रखे तो अच्छी कविता वही होती है जो गद्य के समान सुलिखित होती है और तब शमशेर की कविता का महत्व अपने-आप सिद्ध हो जाता है.

शमशेर की कविता को प्रायः कलावाद, रुपवाद,अतियथार्थवाद और प्रभाववाद के खेमे में बाँटने की कोशिश की गयी है जिससे उसकी दुरूहता घटने की बजाय बढ़ती ही गई है वस्तुतः उनकी कविता को कोई स्पष्ट निर्णयात्मक संज्ञा देने में कठिनाई है. स्वयम शमशेर भी कहते हैं '' मेरे कवि ने कभी किसी फार्म, शैली या विषय का सीमा-बंधन स्वीकार नही किया.''(1)

शमशेर की आस्था मार्क्सवादी विचारधारा और जीवन-दर्शन में होने के बावजूद मार्क्सवाद के साथ उनके काव्य-मानस का सम्बंध प्रायः द्वंदात्मक रहा है. प्रगतिशील आंदोलन के इतिहास में महत्त्वपूर्ण समझी जाने वाली कविता '' ले कर सीधा नारा '' में भी उनकी आंतरिक समस्या अभिव्यक्त हुई है जो अपनी मूल आस्था की जाँच के क्रम में उत्पन्न होती है---

ले कर सीधा नारा/ कौन पुकारा
अंतिम आशाओ की संध्याओ से
मैं समाज तो नही, न मैं कुल/ जीवन
कण समूह में हूँ मैं केवल/ एक कण/ कौन सहारा

.....

1—शमशेर बहादुर सिंह, कुछ और कविताएँ (भूमिका)

शमशेर की प्रगतिशील या सामाजिक भावना को करुणा एक नया कोमल अंतःस्पर्श देती है जो व्यंग्य की निर्मिति कर रचना को सशक्त बनाती है---

'' मुझे वह इस तरह निचोड़ता है/ जैसे घानी में एक-एक बीज दबा कर
पेरा जाता है/ मेरे लहू की एक-एक बूंद किसके लिये/ समर्पित होती है
यह तर्पण किसके लिये होता है?

शमशेर को सिर्फ रोमानियत का ही कवि सिद्ध करने वालो से शमशेर कहते हैं---

मेरी बाते भी तुझको ख्वाबे जवानी सी हैं,
तेरी आँखो में अभी नींद भरी है शायद.

शमशेर के काव्य पर व्यक्तिवाद, मार्क्सवाद, रोमानी आदर्शवाद और छायावाद का भी प्रभाव पड़ा है. उनका सौंदर्य-बोध प्रेम और प्रकृति को सर्वथा नवीन दृष्टि से देखने का उपक्रम करता है. प्रकृति में जीवन का अनुभव प्रत्यक्ष जीवन की स्वीकृति भी है और मुक्ति की आकांक्षाभी---

घिर गया है समय का रथ कही/लालिमा से मढ गया है राग.
भावना की तुंग लहरे/ पंथ अपना/ अंत अपना जान
रोलती हैं मुक्ति के उद्गार.

शमशेर आधुनिक कवियो में सबसे अधिक सघन ऐंद्रियता और प्रेम की पीडा के कवि हैं. अज्ञेय ने इसीलिये उन्हे कवियो का कवि कहा है. तीव्रतम ऐन्द्रिकता का अधिकांश शमशेर के यहाँ नारी सौंदर्य को समर्पित है. नामवर सिंह के अनुसार,'' वस्तुतः शमशेर की कविता पदार्थ की पदार्थता का जयगान है और देह की दैहिकता का पावन महोत्सव. शमशेर सौंदर्य के उद्गाता नहीं, रूप के लक्षक हैं. उनकी दृष्टि प्रायः उस पर टिकती है जो ठोस और खूब गठा हुआ है.''(1) सौंदर्य का ऐसा ही वर्णन है प्रस्तुत कविता '' एक मुद्रा से'' में---

सुंदर उठाओ निज वक्ष/ और- कस-उभर
एक ठोस बदन अष्ट-धातु का-सा / सचमुच/ जंघाए दो ठोस दरिया

.....

1—डॉ0 नामवर सिंह, जनसत्ता 23 मई, 1993

शमशेर ने आधुनिक चित्रकला का व्यवहारिक अध्ययन किया था और वे फ्रांस के इम्प्रेशनिस्टिक आंदोलन से काफी प्रभावित रहे थे. बाख के संगीत का भी उन पर गहरा असर था. संगीत और चित्र को आधार बना कर उन्होने जो कविताएँ लिखी हैं वह हिंदी कविता के क्षेत्र में एक नया उल्लेखनीय प्रयोग है. नामवर सिंह के शब्दो में,''कविता में कला का ऐसा सन्योजन और यह वैभव कालिदास के बाद शमशेर के ही काव्य में सम्भव हो पाया है. शब्द रंग भी हैं, रेखा भी और सुर भी—शब्द में निहित इन सम्भावनाओ की तलाश जैसी शमशेर में है, अन्यत्र विरल है."(1)

शमशेर की काव्यगत सम्वेदना एवम संरचना के जटिल, उलझी हुई, अधूरी और अमूर्त दिखने की वजह यह है कि वे प्रभाववादी चित्रकार के समान सर्वाधिक सम्वेदनात्मक प्रभाव डालने वाले अंशो को ही प्रस्तुत कर के शेष अचित्रित अंशो को पाठको के लिये अपनी सृजनात्मक कल्पना द्वारा पूरा करने के लिये ही छोड देते हैं. ''ऊषा'' को शमशेर एक चित्रकार की नजर से देखते हैं जिसके हाथ में रंग और ब्रश है—

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे/ भोर का नभ

राख से लीपा हुआ चौका/ (अभी गीला पडा है)

उनकी काव्य-संरचना में संगीत के प्रभाव को देखा जा सकता है---

''बा द ल अक तू बर के

ह्न के रं गीन ऊ दे''

शमशेर की वाक्य-योजना विलक्षण है. वे वाक्य नहीं प्रायः शब्द लिखते हैं. उनके बिम्ब, उपमा, प्रतीक यहाँ तक कि स्पेस भी पाठक के सम्वेदनो और भावबोधो को निजी छुअन देते हैं और नयी पहचान भी. यही कारण है कि शमशेर के यहाँ पीली शाम मौजूद है जो कि पतझर के जरा अटके हुए पत्ते की तरह है या शाम के कोमल अंधेरे के मन की चिंता मिलती है. वे अमूर्तन से वह काम भी ले लेते हैं जिसमे गालिब जैसे क्लासिकी सम्वेदना के कवियो की खास दिलचस्पी रही है और जिसे सौंदर्य और विसंगति, आत्मीयता और अजनबीपन का मिश्रण भी कह सकते हैं.

शमशेर ने विभिन्न काव्यरूपो का प्रयोग किया है. उन्होने गीत, लोकगीत, सॉनेट, गज़ल और रूबाई सभी लिखे हैं. उर्दू में बाजाब्ता गज़ल कहने की सामर्थ्य यदि हिंदी के किसी कवि में है तो वह शमशेर ही हैं. अतः शिल्प और सम्वेदना दोनो ही के स्तर पर शमशेर एक अप्रतिम कवि हैं.

.....

1—डॉ. नामवर सिंह, शमशेर बहादुर सिंह: प्रतिनिधि कविताएँ,राजकमल पेपरबैक्स, प्र.सँ.-1990,पृ-7

संदर्भ ग्रंथ :

1—शमशेर बहादुर सिंह, प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल पेपरबैक्स, पहला सँ.-1990
2—डॉ. नामवर सिंह, कविता के नये प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, चौथा सँ.—1990
3—नंदकिशोर नवल, हिंदी आलोचना का विकास, राजकमल प्र., प्र. सँ.—1981
4- डॉ. नामवर सिंह, इतिहास और आलोचना, नया साहित्य प्र., प्र. सँ.—1962